पंचम अध्याय

पंचम अध्याय
'देवीना' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन

5.1 नारी का परंपरागत जीवन

नारी का परंपरागत जीवन संघर्षमय रहा है। नारी पुरुष की कमजोरी होती है। हम पिछली परंपरा देखते हैं तो हमें यह विदित होता है कि नारी के कारण ही महाभारत, रामायण तथा बड़े-बड़े युद्ध हुए है। नर नारी से ही पैदा होकर नारी के लिए ही मिट जाता है। नारी इस सृष्टि की निर्माती है तथा शक्तिशालीनी है। पर इतना सबकुछ होते हुए भी नारी अबला है। जन्म से लेकर मृत्यु तक उसे नर का ही सहारा लेना पड़ता है। बचपन में पिता का, युवावस्था में पति का और बुढ़ापे में बेटे का। नारी के परंपरागत जीवन संबंधी इसलिए मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं –

"अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में दूध और आँखों में पानी।"[1]

चित्रित नारी के परंपरागत जीवन को हम निम्न रूप से देख सकते हैं।

5.1.1 पतिव्रता की अग्निपरीक्षा

हम एक परंपरा से देखते आए है, सुनते आए है तथा इतिहास गवाह है पतिव्रता को ही अपना पावित्र्य, सतित्व तथा चारित्र्य सिद्ध करने के लिए अग्निपरीक्षा देनी पड़ती है। पुरुष कभी अपना चारित्र्य बेदाग है यह साबित करने के लिए अग्निपरीक्षा नहीं देता। उसकी इस वृत्ति के मूल में अपनी वासना-तृप्ति के लिए नारी के शोषण की प्रवृत्ति रही है। इस संबंध में उसका तर्क है – क्योंकि मनुष्य प्रकृति से ही 'बहुस्त्रीवादी' है। मगर वह तमाम आर्थिक और सामाजिक दबावों से मजबूर होकर 'एक पत्नीवाला' बनकर रहने लगा है। मैं (पुरुष) अपनी पत्नी को जो इतने विविध रूपों में देखता हूँ न वह इसलिए कि मेरे पुरुष रक्त में जो 'पोलीगेमी' के किटाणु है, उन्हें शांत कर सकूँ और इनके साथ जी सकूँ।"[2] पत्नी का भी कोई निजी अस्तित्व हो सकता है वह इसकी कल्पना भी नहीं करता। फलतः उनकी शादी चाहने और होने के अंतर को स्पष्ट करती हुई रह जाती है। उसकी प्रत्येक इच्छा की पूर्ति ही उसके पौरुष्य का लक्षण है। उपन्यास का नायक 'देवकुमार' अपनी प्रेमिका पत्नी 'देवीना' के साथ प्रेम करता है तथा विवाह करना चाहता है। लेकिन देवीना को अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से फुसलाकर वह देवीना के ही घर में उसके साथ शादी से पहले ही शारीरिक संबंध करता है। तथा शारीरिक मिलन होने के बाद वह उसे विवाह का वचन देता है। लेकिन देवीना के पिताजी दूरदर्शी है वे जानते है देवीना-देवकुमार का प्रेम महज एक खेल है। वे उन दोनों को बताते है। नौजवानों तुम्हारा प्रेम सच्चा है यह साबित करने

के लिए तुम दोनों को पूरे चार साल अलग-अलग रहना है, अगर चार साल बाद भी अगर तुम्हारा प्रेम जीवित रहा तो मैं तुम्हारी शादी तहेदिल से करूँगा।

अतः अपने प्रेम की अग्निपरीक्षा देने के लिए देवीना तथा देवकुमार अलग-अलग दिशा में निकल पड़ते हैं। देवीना पूरे चार साल 'लहरतारा' नामक गाँव में बिताती है तथा उस गाँव का सर्वांगिन विकास करती है। इस चार साल में वह हरपल अपने प्रेमी को याद करती है। अंततः पूरे चार साल बाद वह अतीव आनंद से अपने बाबा के पास आती है लेकिन वहाँ देवकुमार नहीं आता। इन चार सालों में देवकुमार बड़ा आदमी बनता है और भौतिक सुविधाभोगी जीवन जीता है। इन चार सालों में वह देवीना का प्रेम तो क्या उसका नाम तक भूल जाता है। तब देवीना इस वास्तविकता से परिचित हो जाती है तब वह अपने बाबा से कहती है, "मेरा अब तक का सब जानना-देखना जैसे निस्सार हो रहा है। मेरा आत्मसंयम, मेरी सरलता जैसे टूटकर बिखर रही है।"[3] इस तरह देवीना उपन्यास की नायिका देवीना को अपने प्रेम की सत्यता को साबित करने के लिए अग्निपरीक्षा देनी पड़ती है तथा परंपरागत नारी जीवन की तरह प्रताड़ित जीवन जीना पड़ता है।

जिस तरह एक परंपरा से केवल नारी को ही अपने पतिव्रता होने की परीक्षा देनी पड़ती है। उसी तरह नर को क्यों यह अग्निपरीक्षा देने का सामाजिक बंधन नहीं है? क्योंकि परंपरा से चली आई इस पुरूष प्रधान संस्कृति ने बराबर इस नारी जाति को अपने अधिकार में रखने का प्रयत्न किया है। पतिव्रता को अग्निपरीक्षा देने को बाध्य करना यह पुरूष मंडली का एक सबसे बडा पड्यंत्र है। अतः इस षड्यंत्र में नारी को चारों ओर से कसकर बांध रखा है। पुरूष को भय है कही नारी भी अपना आचरण हम पुरूषों जैसा करे तो? इस भय के कारण ही उन्होंने नारी को इस बंधन में कैद किया है।

नारी विवहिता होने के कारण अपने गले में मंगलसूत्र बांधती है। क्योंकि परंपरा से चली आई इस समाज व्यवस्था ने उसपर यह बंधन डाला है कि कोई भी विवाहिता नारी अपने गले में पवित्रता की निशानी मंगलसुत्र बांधे। लेकिन इस तरह का मंगलसुत्र विवाहित पुरूषों के गले में क्यों नहीं है? क्योंकि इस समाज व्यवस्था को बनाने वालों ने पुरूष ही प्रमुख है। अतः उन्होंने इस समाजव्यवस्था का निर्माण करते समय अपने अनुकूल ही पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था का निर्माण किया है। इस समाज व्यवस्था ने नारी पर जो तरह-तरह के निर्बंध डाले है उनमें से एक है पतिव्रता की अग्निपरीक्षा!

5.1.2 विधवाओं का शोषित जीवन

नारी का जीवन परंपरा से शोषित ही रहा है। इसमें अगर किसी नारी का पति मरता है और उसे विधवा का जीवन जीना पड़ता है तो उसका जीवन नरकीय बनता था।

प्राचीन परंपरा में किसी विधवा को पुनर्विवाह करने की अनुमति नहीं थी। प्रस्तुत देवीना उपन्यास में कतिपय विधवाओं का चित्रण हुआ है लेकिन उसमें किसी विधवा के पुनर्विवाह की बात नहीं की है। इसमें भागवंती नामक युवती भी विधवा का जीवन जी रही है। वह लहरतारा गाँव में लोगों के कपड़े धोकर अपना गुजर-बसर करती है। लेकिन उसके पुनर्विवाह की बात नहीं की है। उसे अपने मृत पति पर बड़ा गर्व है। वह कहती है, "ना कोई देवी ना देवता। अरे सब निमक हराम होई गए गाँववाले, मरद होई गए मेहरा औ।"[4] इस तरह देवीना उपन्यास में विधवाओं का परंपरागत यातनामय जीवन चित्रित किया है।

नारी के परंपरागत जीवन में कुछ बाते, कुछ संस्कार ऐसे है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने आप चलते हैं। विधवा नारी का विधवा के ही रूप में जीवन जीना मतलब उसे पुनर्विवाह करने की अनुमती नहीं देना यह नारी के प्रति एक परंपरा से चली आई एक रीति पद्धती है। लेकिन इस परंपरागत व्यवस्था ने पुनर्विवाह का यह बंधन सिर्फ नारी पर ही डाल दिया है। पुरूष मात्र अपने जीवन में एक पत्नी मरने पर विधवा नहीं कहलाता। वह चाहे तो दूसरी शादी कर सकता है। दूसरी भी पत्नी अगर मरती है तो वह तीसरी शादी भी कर सकता है। अतः यह सिलसिला वह चाहे तब तक चला सकता है। अतः समाज में विधवा का जीवन अत्यंत सोचनीय बनता है। एक बार किसी विवाहिता का पति मरता है तो सारी उम्र बेचारी को बनवास में बितानी पड़ती है। अतः कहा जाता है प्रभु राम ने चौदहसाल वनवास किया था तब आगे उनका जीवन सफल हुआ। पर ये बेचारी विधवाए पूरी उम्र वनवास में बीताती है फिर भी उनका जीवन सफल नहीं होता।

प्रस्तुत उपन्यास में जिस तरह भागवंती नामक युवती विधवा का जीवन जीती है। उसी प्रकार 'काली' नामक युवती की माँ विधवा अभागा जीवन जीती है। वह अपनी पूरी उम्र अभाव ही अभाव में बीताती है। तथा जींदगी का बोझ ढोते ढोते अपनी पुत्री 'काली' तथा एक पुत्र को पालती है। अतः वह इतनी निर्बल बन गई है कि गाँव के अमिरजादे आवारा लडकों के अन्याय से अपनी जवान पुत्री 'काली' को नहीं बचा पाती।

5.2 नारी का वर्तमान जीवन

नारी के वर्तमान जीवन संबंधी डॉ. लाल कहते हैं कि, नर-नारी दोनों महत्वपूर्ण शक्तियाँ है। किंतु सृष्टि और मानवता के व्यापक हित में उनका परस्परावलंबन आवश्यक है। जब एक शक्ति दूसरी पर हावी होने लगती है तभी नर-नारी के संबंध तनावपूर्ण एवं विषाक्त हो जाते है। पुरुष का अहं एवं स्वार्थ नारी को समग्रता में न देखकर टुकड़ों में बाँटकर देखने का आदी होता है। यही कारण है कि नारी-

मुक्ति, नारी-शिक्षा एवं नारी अधिकारों के दावों से लैस आधुनिक सभ्यता में भी नारी मुक्त नहीं हो सकी है।"[5] नारी के वर्तमान जीवन संबंधी डॉ. लक्ष्मीरायजी कहती है, "हमारे पास शब्द है एकता, निष्ठा, भक्ति, प्रेम। हम केवल इसपर विचार कर सकते हैं। पर द्रौपदी की चीख हमारे कानों में क्यों टकरा रहीं है? आप घर जाकर या यहाँ से बाहर निकलते हुए उस पर विचार कर सकते हैं। केवल विचार क्योंकि आपको विश्वास है कि यह घटना हमारी नहीं, आप सबकी नहीं है, किसी और की है, पुराण की है। ..... पर यह चीख आज की है। अभी सुनाई पड़ रही है, अभी यही।"[6] प्रस्तुत देवीना उपन्यास में चित्रित नारी का वर्तमान जीवन हम निम्नरूप से देख सकते हैं।

5.2.1 पुरुष के हाथ का खिलौना नारी

परंपरागत जीवन हो या वर्तमान जीवन हो, नारी हमेशा पुरुष के हाथ का खिलौना ही रही है। पुरुष जब चाहे उसके साथ खेलता है, जब चाहे उसे फेंक देता है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका देवीना अपने प्रेमी देवकुमार से सच्चा प्रेम करती है तथा उससे विवाह करना चाहती है। देवीना अपने प्रेमी देवकुमार को पाने के लिए उसके साथ विवाह करने के लिए पूरे चार साल का विरह सहती है। इन चार साल के विरह में वह प्रतिदिन देवकुमार की स्मृति में बिताती है। लेकिन अंत में उसे अपना प्रेमी देवकुमार अपमानित करता है तथा उसके साथ विवाह करने से मुकर जाता है। जब देवीना अपने प्रेमी देवकुमार को शादी के लिए मनाती है तब वह कहता है, "मैं वह नहीं रहा, इतना याद है, जिसके पास आप यहाँ आई...। क्षमा चाहता हूँ।"[7] इसी तरह उपन्यास की नायिका देवीना से खिलवाड़ किया जाता है।

जिस तरह हम किसी बच्चे को खेलने के लिए खिलौना देते हैं। और खिलौने के साथ बच्चा खेलता है अब यदि खेलते-खेलते वह खिलौना टूट भी जाए या वह खिलौना कही गूम हो जाए तो हम इतना बूरा नहीं मानते। और कह देते हैं चलो जो कुछ भी हुआ हो जाने दो आखिर वह एक खिलौना ही तो था मामूली। उसी तरह नारी का जीवन एक बच्चे के खिलौने जैसा ही है। पहले नारी का आत्मविश्वास प्राप्त करने के लिए उसे मिठी-मिठी बातों से फुसलाया जाता है। उसके साथ बडे-बडे वादे किए जाते। अतः एक बार अगर उससे विवाह किया जाता है। तो ये वादे उसमें न जाने कहा हवा हो जाते हैं। फिर उस विवाहिता को पुरूष जब चाहे तब अपने इशारों पे नचा सकता है। अतः विवाह के बाद वह नारी को केवल एक बाजार से खरीदकर लाया हुआ खिलौना समझता है। जब जी चाहे उसके साथ खेल दिया जब जी चाहे कहीं फेंक दिया।

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित 'काली' नामक युवती का पति ऐसा ही है। वह 'काली' नामक युवती विवाह करके अपने पति के घर जाती है तब उचित धन साथ में न लाने के कारण उसका पति उसे घर से निकाल देता है। काली के घर की हालत बहूत खराब है, पिताजी बिमार है, माँ बेकार है, तथा छोटा भाई भूख से तडप रहा है। ऐसी मुसिबत की घडी में भी काली का पति उसका साथ नहीं देता। बल्कि उसे केवल एक खिलौना समझकर फेंक देता है।

5.2.2 पुरुष अत्याचार की शिकार नारी

वर्तमान समाज में भी पुरुषों द्वारा स्त्री पर तरह-तरह के अत्याचार किए जाते हैं। "यहाँ स्त्री पुरुष अत्याचार का शिकार है, उसके द्वारा लांछित, प्रताड़ित वा शोषित है। यहाँ स्त्री भाऊक है, उसकी देह यहाँ प्रधान है और वह पुरुष के अत्याचारों को चुपचाप सहती हुई आदर्श भारतीय नारी का भ्रमजाल उत्पन्न करती है।"[8] प्रस्तुत देवीना उपन्यास में भी नारी अत्याचार का चित्रण हुआ है। इसमें काली नामक युवती पर लहरतारा नामक गाँव के पुरुष दिन-दहाड़े अत्याचार करते हैं। इसमें 'काली' के माथे से खून टपक रहा है, वह सड़क पर गिर-गिरकर रो रही है फिर भी उसे बचानेवाला कोई नहीं है। उस भीड़ में कितने सारे पुरुष है लेकिन उनमें से एक भी उस अबला की सहायता के लिए आगे नहीं आता।

नारी पर पुरूषों द्वारा बंद कमरे में चार दिवारे के अंदर तो अत्याचार होते ही है। यह तो आम बात है क्योंकि सदियों से यह होता आया है, और वर्तमान में भी यह घटित हो रहा है। लेकिन नारी के उपर होनेवाले अन्याय अत्याचार ने एक कदम और आगे बढ़ाया है। क्योंकि अब तो दिन दहाडे, खुले आम नारी पर पुरूषों द्वारा अन्याय, अत्याचार होता है। लेकिन यहा सब गूंगे, बहरे और अंधे बसते हैं। खुले आम अगर किसी नारी पर अन्याय होता है तो भी हम सब चूपचाप तमाशा देखने का ही काम करते हैं। कोई भी पुरूष आगे बढ़कर उस नारी प्रति अन्याय का विरोध नहीं करता। प्रस्तुत उपन्यास में 'काली' नामक युवती दिन दहाडे पुरूषी अत्याचार का शिकार होती है। वह खून से लथपथ होकर जमिन पर गिरती है लेकिन कोई उसे उस अन्याय से मुक्त नहीं करता।

'माधवी' नामक नारी भी राजकुमार नामक पुरूष के अन्याय-अत्याचार का शिकार होती है। राजकुमार एक दिन खूब शराब पीकर अपने घर आता है। शराब ज्यादा पीने के कारण वे ठीक से चल भी नही सकते। रात को दो बजे वे अपनी रखैल 'माधवी' को निंद से जगाते हैं। तथा उसे गाना गाने को कहते हैं। अतः रात को दो बजे वह भी निंद से जागे भला माधवी कैसे गाना गाती? अतः माधवी गाना गाने को असमर्थता दर्शाती है। तो गुस्से में आकर राजकुमार उसे खूब पिटते हैं। तथा तहखाने में बंद करते हैं। इस तरह नारी के उपर पुरूषी अत्याचार का चित्रण प्रस्तुत हुआ है।

5.2.3 झूठी कसमें, झूठे वादें की शिकार

नारी हमेशा पुरुष के झूठे वादे तथा झूठी कसमों की शिकार हुई है। इस संबंध में डॉ. लाल कहते हैं, "पति-पत्नि एक-दूसरे से मिलते हैं और दोनों एक दूसरे के क्षणिक मिलन को आत्मसमर्पण समझ बैठते हैं। वस्तुतः वह दोनों का प्रकृति के प्रति आत्मसमर्पण है, एक-दूसरे के प्रति नहीं। क्योंकि दो टूटे हुए आपस में मिलते हैं — अपने में जोड़ लगाकर और वे जोड़ बनावटी होते हैं। जिनमें न जाने कितने इस तरह के सूराख रह जाते है, जहाँ से वे बूँद-बूँद टपकते रहते हैं। यह विवशता है। इस तरह आज के पति-पत्नी एक-दूसरे से मिलते नहीं, जुड़ते है। कभी अंधी प्रकृति से, कभी विवाह के मंत्रों और मंडप की अग्नि से और कभी यों ही अपनी भयानक वासना से।"[9] प्रस्तुत उपन्यास में भी देवीना-देवकुमार का मिलन सिर्फ एक भावुकता ही था। इसलिए बाबा उन दोनों को कहते हैं, "तुम दोनों के देखने में एक पर्दा है, भावुकता का, रोमांस का।"[10]

पुरूष वर्ग ने हमेशा चिकनी-चुपडी बातों से नारी वर्ग को बहलाया, फुसलाया है। तथा नारी को अपने झूठे कसमों का तथा झूठे वादों का शिकार बनाया है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक 'देवकुमार' अपनी प्रेमिका 'देवीना' से प्रम करता है। और प्रेम का विश्वास दिलाने के लिए 'देवीना' को बहलाने के लिए बड़ी-बड़ी बाते करता है। तथा उसे अपने प्रेम के जाल में फसाने के लिए बड़े-बड़े वादे करता है। तथा पहले ही मिलन में 'देवीना' से विवाह करना चाहता है। देवकुमार किसी तरह देवीना को अपने प्रेम का विश्वास दिलाता है। तथा एकांत में उससे शारिरीक संबंध स्थापित करता है। फिर आगे जाकर जब देवीना एक पुत्र की माँ बनती है। तथा उस पुत्र का नाम 'अनुराग' रखती है। फिर जब वह अपने प्रेमी पति 'देवकुमार' को मिलने अपने पुत्र अनुराग समेत जाती है तब देवकुमार अपनी पत्नी देवीना तथा पुत्र 'अनुराग' को पहचानने तक को इन्कार करता है। और इतना ही नहीं तो देवीना को कहता है तुम्हारे इस पुत्र का बाप मैं नहीं तो कोई और हो सकता है। अतः वह देवीना का अपमान करके उसे पुत्र समेत घर से निकाल देता है। तब देवीना को खूब पछतावा होता है, तथा अपने प्रेमी देवकुमार ने अपने साथ प्रथम मिलन के अवसर पर किए वे हमेशआ साथ जिने मरने के वादे याद आते हैं। और उसे अपने आप पर ही शर्म महसूस होती है। इसी तरह प्रस्तुत उपन्यास में कतिपय नारीयों को पुरूषों की झूठी कसमे, तथा वादों का शिकार होना पड़ा है।

5.2.4 सामाजिक अत्याचार

सामाजिक अत्याचार तरह-तरह के होते हैं, लेकिन वह कितने भी तरह से क्यों न हो, सबसे पहले नारी पर ही होते हैं। इस संबंध में राजकिशोर कहते हैं, "अत्याचार वे चाहे राज्य की ओर से हो या फिर संपन्न प्रभुत्वशाली वर्गों की ओर से या फिर

सामाजिक शक्तियों की टकराहट की वजह से – सबसे ज्यादा और प्रत्यक्ष रूप में स्त्रीयों के जीवन में ही प्रमुखता से दिखाई देते हैं।"[11] प्रस्तुत उपन्यास में भी नारीयों पर तरह-तरह से अत्याचार किए गए है। देवीना जिस समाज में पलती है वह समाज इस पर कभी आरोप लगाता है कि वह चमार की बेटी है, तो कोई उसे मुसलमान की बेटी कहता है। इस तरह वह समाज देवीना को तथा उसकी माँ बनिया को हमेशा अपमानित करता रहता है। गाँववाले देवीना के बारे में कहते हैं, "कमालपुर की मुसलमान बेड़िन की जनी है यह लड़की।"[12] अतः आदि तरह-तरह की बातों से नारी को प्रताड़ित होना पड़ता है।

जैसा की हम देखते है कि सामाजिक अत्याचारों में सबसे ज्यादा अत्याचार नारी पर ही होते हैं। क्योंकि इस समाज व्यवस्था को बनानेवाला पुरुष ही है। अतः इसी पुरुष वर्ग ने जानबुझकर समाजव्यवस्था का निर्माण इस तरह से किया है कि जिसमें ज्यादा से ज्यादा पुरुष को स्वातंत्र्य मिले तथा ज्यादा से ज्यादा नारी को पारतंत्र्य मिले। फिर भला ऐसी समाजव्यवस्था में नारी पर तरह-तरह के अन्याय अत्याचार होना कोई नई बात नहीं है।

प्रस्तुत उपन्यास में सबसे पहले सामाजिक अत्याचार हमारे उपन्यास की नायिका देवीना बनती है। तथा उसके बाद 'काली' नामक युवती बनती है। इसके साथ-साथ 'माधवी' नामक युवती को भी सामाजिक अत्याचार का शिकार होना पड़ता है। तथा इतना ही नहीं तो इसी सामाजिक अत्याचार में बेचारी माधवी को अपने जान से हाथ धोना पडता है। देवीना जो अपना समस्त जीवन 'लहरतारा' नामक गाँव के विकास में लगा देती है। एक अज्ञानी, अधंविश्वासु गाँव को प्रगति के पथ पर ला देती है। तथआ गाँव के हर युवक तथा युवती को आधुनिकता तथा विकासोन्मुख बनाती है। लेकिन अंत में वही लहरतारा गाँव वाले उस देवीना के योगदान को भूलकर गादूर मिसिर जैसे ढोंगी आदमी के बातों में आकर उस देवी-सी देवीना को उस लहरतारा गाँव से भगाने का प्रयास करते हैं। इसी तरह प्रस्तुत उपन्यास में सामाजिक अत्याचारों के कतिपय प्रसंग घटित हुए है।

5.2.5 नारी नेतृत्व पर अविश्वास

इस परंपरागत पुरुष प्रधान समाजव्यवस्था में नारी को प्रधानता नहीं मिल रही है। अगर कोई नारी इन परंपरागत मान्यताओं को तोड़कर अपनी प्रतिभाशक्ति के बल पर समाज का, नारीशक्ति का नेतृत्व करती है तो उसपर तथा उसके नेतृत्व पर अविश्वास प्रकट किया जाता है। नेतृत्व करनेवाली नारी लाल के शृंगार उपन्यास में कहती है, "वह मुझे किसी और के साथ बातें भी करते हुए देखता, तो बेहद उदास हो जाता। धीरे-धीरे मैंने देखा, वह मुझपर इतना अधिकार जमाने लगा है कि मेरा उठना-बैठना,

चलना-फिरना यहाँ तक कि खाना-पीना भी मुश्किल हो गया है। जैसे मैं कुछ नहीं हूँ, सिर्फ उसकी प्रेमिका हूँ। मैं उससे कुछ भी कहती, वह मुझपर रोब जमाता, गुस्सा करता।"[13] देवीना को भी लहरतारा गाँववालों की प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है। लहरतारा गाँव पूरी दूनिया में बदनाम गाँव था लेकिन ऐसे गाँव को देवीना अपनी कर्मभूमि बनाती है। गाँव में तरह-तरह के सुधार कराती है तथा गाँव को आर्थिक दृष्टि से स्वयंपूर्ण बनाती है। फिर भी गाँववाले कहते हैं, "कैसी बतकही करत हो। एक हाथ से ताली थोड़े ही बजती है।"[14]

भले ही समाज नारी की मुक्त कंठ से स्तुति करे तथा नारी को पुरुष के समान माने लेकिन वास्तविकता कुछ और है। समाज के पुरूष ठेकेदार लोगों की तालियाँ लेने के लिए। तथा लोगों में मशहूर होने के लिए अपनी खुद की प्रसिद्धि के लिए नारी को लेकर बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। लेकिन अपने अंतरिक मन में नारी के प्रगति पर इर्षा करते हैं। अगर किसी बड़े काम का नेतृत्व नारी करना चाहती है तो पुरूष मंडली उस नारी नेतृत्व का विरोध करते हैं। फिर भी अगर अनेक विरोधों को पार करके किसी बडे काम का नेतृत्व नारी स्विकारती है तो परंपरागत पुरूषी अहंकार में जीनवाले पुरुष उस नारी की तरह-तरह से निंदा करते हैं। उस नेतृत्व संपन्न नारी की सारी जन्मकुंडली निकालकर उसके व्यक्तिगत जीवन का आधार लेकर उसे बार-बार सताया जाता है।

प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित देवीना, भागवंती, बनिया आदी कई नारीयों को अपने नेतृत्व संपन्न गुन के कारण अपने समाज के पुरूषों से अपमानित होना पड़ा है। देवीना 'लहरतारा' नामक बेजान गाँव में जान लाती है फिर भी उसे उसी गाँव के पुरुष मुखिया गादूर मिसिर से अपमानित होना पड़ता है। उसी गाँव की अन्य एक भागवंती नामक युवती जो गाँव में उपस्थित सभा में आगे आकर गाँववालों को गैर कानूनी काम करने के बजाय अपनी-अपनी खेती करने की सलाह देती है तब उसे गाँववालों से अपमानित होना पडता है। उसी तरह जाँतिप्रथा विरोधी बनिया को भी अपने गाँववालों से अपमानित होना पड़ता है। इस प्रकार नारी नेतृत्व पर अविश्वास प्रकट हुआ है।

5.2.6 पुरुष की कामुकता का शिकार

परंपरा से ही नारी की ओर देखने का दृष्टिकोन दूषित रहा है। अतः वर्तमान समय में भी नारी की ओर सबसे पहले कामुकता की नजर से ही देखा जाता है। प्रस्तुत 'देवीना' उपन्यास में चित्रित लहरतारा गाँव में नारी की ओर देखने का दृष्टिकोन दूषित है। उस गाँव में स्त्री-पुरुष यौन संबंधों में किसी तरह का कोई नैतिक बंधन नहीं है। गाँव की युवा, बिनब्याही लड़कियाँ शादी से पहले माँ बनाई जाती है। चंद रुपयों के लिए नारी देह का व्यापार किया जाता है तथा गाँव की नारीयों को जबरन वासना का शिकार बनाया जाता है। गाँव की भोली-भाली युवतियों को वेश्या व्यवसाय करने

के लिए मजबूर करनेवाले लोग उन्हें कहते हैं, "इस साल तुम दोनों के जाने की बारी है। कारपर बिठाकर ले चलेंगे सीधे बंबई।"[15] इस तरह देवीना उपन्यास में नारी का सिर्फ कामुकता की नजर से ही देखा है।

प्रस्तुत देवीना उपन्यास में नारी का श्लीलता के साथ वर्णन होने के बजाय ज्यादा से ज्यादा अश्लिलतामय वर्णन ही हुआ है। आज के वर्तमान समय में नारी को वासनामय दृष्टि से ही देखा जाता है। आज परकीय नारी को सिर्फ कामिनी की नजर से देखा जाता है। अतः नारी के माँता, भगिनी, सावित्री... आदि रूप उपेक्षित ही रहे है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित 'लहरतारा' गाँव तो मानो कामुकता का सागर है। इस गाँव में जवान लडके तो कामुकता की लहर में जी रहे है लेकिन इसके साथ-साथ अबाल वृद्ध भी कामुकता की नशे में जी रहे थे। इस गाँव में अगर उनको अपनी कामुकता की प्यास बुझाने ते लिए कोई युवती नहीं मिलती तो वे बड़े-बड़े शहरों में जाकर पैसों से अनाथ, लावारिस बच्चिया खरीदकर ले आते जवान बन जाती तब उनके साथ शारिरीक संबंध रखते थे। इस तरह पूरा गाँव कामुकता की नशा में जी रहा था।

इसके साथ-साथ देवीना नामक युवती अपने ही प्रेमी देवकुमार की कामुकता का शिकार होती है। तथा 'माधवी' नामक युवती अपने ही पालनकर्ता राजकुमार की कामुकता का शिकार बनती है। और 'काली' नामक युवती अपने ही गाँव के आवारा, बदचलन आमिरजादों की कामुकता का शिकार बनती है। इसी तरह प्रस्तुत उपन्यास में नारी को सिर्फ कामुकता की नजर से देखने के कतिपय प्रसंग चित्रित किए है।

5.2.7 नारी सपनों को तिलांजली

जिस तरह पुरुष (नर) के अपने जीवन में अनेक सपने होते हैं, उसी तरह नारी के भी अपने जीवन में अनेक सपने होते हैं। लेकिन इस पुरुष-प्रधान समाजव्यवस्था में पुरुषों के सपनों के आगे नारीयों के सपने गौण माने जाते हैं। अतः नारी के शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक शोषण की गाथा दिल को दहला देनेवाली है।"[16] प्रस्तुत उपन्यास की नायिका 'देवीना' का सपना था एक खुशाल जिंदगी जीने का लेकिन परंपरागत पुरुषी अहंकाररूपी देवकुमार ने उस सपने को देखते-देखते राख कर दिया। जिन सपनों को देवीना ने अपने हृदय की गहराइयों में छिपाकर रखा था। जिसके सहारे वह अपना जीवन जीती है तथा अपने सपनों को साकार करने के लिए वह चार साल का अग्निप्रवासतक करती है। लेकिन उसका पति देवकुमार पलभर में ही देवीना के सपनों को चकनाचुर कर देता है। अतः यही हालत वर्तमान नारी जाति की भी है।

सपने देखना मनुष्य का सहज स्वाभाविक स्वभाव है। उन सपनों में से कुछ सपने वास्तविक जगत में सच न होने के कारण ही स्वप्न जगत में ही सपने ही बनकर रहते

हैं। अगर सूक्ष्मता से देखा जाए तो हमारे पुरूष प्रधान संस्कृति में, हमारे परिवार में लडके के सपनों का ज्यादा विचार किया जाता है तथा अपने कुल का दिपक लडका ही होता है इस भावना से उसके माता-पिता अपने बेटे के सपनों को साकार करने के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं। लेकिन अगर उसी परिवार में कोई लड़की होती है तो उसके सपनों का कोई विचार नहीं करता। यहाँ तक की उस लडकी को सपने देखने से भी मना किया जाता है। अतः उसके सपने साकार कराने का कोई विचार नहीं करता!

प्रस्तुत उपन्यास में भी देवकुमार नामक युवक अपनी प्रेमिका, पत्नी देवीना के सुनहरे सपनों को तिलांजली देता है। मतलब अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए वह देवीना की भाव-भावनाओं की कोई किमत नहीं करता। उसी तरह 'काली' नामक युवती का पति उसके सुखी परिवार के सपनों को पलभर में समाप्त करता है। तथा उसे दर-दर की ठोकरे खाने के लिए मजबुर कर देता है। इसी तरह प्रस्तुत उपन्यास में नारी सपनों को तिलांजली देने की पुरुषप्रधान समाज व्यवस्था की प्रवृत्ति को चित्रित किया है।

5.2.8 आत्मसमर्पण की भावना

नारी की आत्मसमर्पण भावना सर्वश्रेष्ठ है। वह अपना तन-मन-धन पुरुष पर न्योछावर करती है। नारी ह्रदय विशालकाय होता है। मनुष्य समुद्र की गहराई नाप सकता है लेकिन नारी ह्रदय की गहराई नहीं नाप सकता। अतः नारी का पुरुष के प्रति आत्मसमर्पण भाव सर्वश्रेष्ठ रहता है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका देवीना देवकुमार से प्रेम करती है। उसका प्रेमी उसे अपनी वासना का शिकार बनाते हुए कहता है, "मेरी प्राण-प्रिया, मुझे अपने रूप में बाँध ले, ताकि हम दो अपरिचित अपने इस उन्माद और आनंद की नदियाँ में कहीं बह न जाए। हे ईश्वर!"[17] अतः देवीना अपने प्रेमी देवकुमार की इस भावनामय बातों में आकर अपना खुद का अस्तित्व उसके अस्तित्व में मिलाती है और देवकुमार के प्रति अपना आत्मसमर्पण देती है। अतः देवीना अपना आत्मसमर्पण देते हुए अपने प्रेमी के साथ जीवनडौर बाँधती है। यह सब करते हुए उसके मन में कहीं कोई शंका नहीं होती है। वह कहती है, "हमें नहीं, हमारे प्रेम को आशीष दे। हमें नहीं, हमारे इश्क को पनाह दे।"[18] लेकिन उसका प्रेमी देवकुमार उसके आत्मसमर्पण के साथ खिलवाड़ करता है।

पुरुष के आत्मसमर्पण की भावना की तूलना में नारी की आत्मसमर्पण की भावना सर्व श्रेष्ठ रही है। नारी जब जिद पर आ जाती है तब वह पुरुष के लिए अपना अस्तित्व तक मिटा देती है। इसलिए नारी को पुरुष की अर्धांगिनि मानते हैं। वह जिस पुरुष के प्रति अपना आत्मसमर्पण करती है, उसके साथ अपने जीवन की डोर बांधती है, तथा उस पुरुष के सात हर सुख, दुख में उसका साथ निभाती है। कभी कभार खुद भूखी रहकर अपने पति को खाना खिलाती है। तथा नारी पुरूष को परमेश्वर मानती है।

प्रस्तुत उपन्यास में नारी के इसी आत्मसमर्पण की भावना के कतिपय प्रसंग चित्रित हुए है। इस उपन्यास का प्रमुख नारी पात्र देवीना अपने प्रेमी देवकुमार के प्रति आत्मसमर्पण करती है। अपना सब कुछ उसपर नौछावर करती है। लेकिन अंत में उसे अपने प्रेमी से प्रताडना, अपमान ही प्राप्त होता है। 'काली' नामक युवती को उसका पति शादी के बाद कुछ ही दिनों में उसकी गरीबी के कारण त्यागता है। और भरी मुसिबतों में हजारो गम को सहते हुए 'काली' अपना जीवन यापन करती है। लेकिन अंत में जब उसका पति उसे अपने घर लेने आता है तब 'काली' पुरानी सारी बातों को भूलकर अपने पति के प्रति आत्मसमर्पण करती है। तथा फिर से नए तरीकेसे अपना संसार शुरु करने के लिए अपने पति के साथ जाती है। इस तरह नारी के आत्मसमर्पणकारी भावना का चित्रण हुआ है।

5.3 नारी श्रेष्ठत्व

नारी श्रेष्ठत्व संबंधी डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल कहते हैं कि, "स्त्री पुर्णतः स्त्री है, एक पुल की भाँति जो सबको मार्ग देती है तथा दो विरोधी कूलों को जोड़ देती है।"[19] फिर भी नर-नारी संबंधों में नर को ही श्रेष्ठ माना जाता है। लेकिन लाल बतलाते हैं कि नर-नारी का एकसमान महत्व है। इस संबंध में लाल के विचारों संबंधी वर्माजी कहते हैं कि, "लाल ने न तो पश्चिम के मुक्त यौन संबंधों और न ही भारतीय परंपराओं को सर्वथा दोषमुक्त माना है। उनका आग्रह इस बात पर रहा है कि दांपत्य जीवन में ही इन पहलुओं को खोजकर पूर्णतः प्राप्त की जा सकती है। लेकिन इसके लिए पति-पत्नी दोनों को एक दूसरे की गहराई में जाकर समझना होगा। वर्तमान में यह परिचय अधूरा, कामचलाऊ और औपचारिक होता है। डॉ. लाल के नाटकों में नारी घर की शोभा ही नहीं उसका मूलाधार है। नर-नारी के पारस्पारिक सहयोग एवं आत्मिक सम्मिलन से जीवन रसमय तथा परिपूर्ण हो जाता है।[20] अतः नर और नारी की महानता तथा उसकी उपयुक्तता संबंधी डॉ. विष्णुदत्त राकेश नारी जाति का गुणगौरव करते हुए अपने 'नभग' खंडकाव्य में कहतें हैं —

"नारी नर की अर्धांश कला,
नर नारी के तन की गरिमा।
शिवशक्ति अर्धनारीश्वर बन,
कहते नर-नारी की महिमा।।"[21]

5.3.1 आत्मसंयमी नारी

आत्मसंयम नारी का एक श्रेष्ठ गुण है। नारी अनेकविध रूपों में अपना कर्तव्य पूरा करती है। वह माता, पुत्री, बहिन, पत्नी आदि अनेक रूपों में पुरुष के मार्ग में पथदीप बनाती है। इन सभी रूपों में वह अपना आत्मसंयम बनाएँ रखती है। प्रस्तुत देवीना

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR.

उपन्यास की नायिका 'देवीना' एक आत्मसंयमी नारी है। वह देवकुमार नामक युवक से प्रेम करती है। देवकुमार भी देवीना से प्रेम करता है। अब वह उमंग में आकर देवीना को कहता है कि हम दोनों आज अभी इसी वक्त विवाह करेंगे। लेकिन उस वक्त देवीना उमंग में न आकर शांत संयत भाव से विचार करती है तथा अपना आत्मसंयम कायम रखते हुए देवकुमार को कहती है, "नहीं पहले हमें बाबा के पास जाना होगा।"[22] अतः वह एक आत्मसंयमी नारी के रूप में सामने आती है।

नारी व्यक्तित्व में आत्मसंयम को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। अतः नारी का अपने आप के प्रति संयमी होना उसके लिए परम भाग्यशाली साबित होता है। जो नारी अपने जीवन यापन में इम्तिहान की घड़ी में अपने आप में संयम नहीं रख पाती और भावना के बहाव में जाती है। तो उस असंयमित होने का पछतावा उसे उम्रभर होता है।

प्रस्तुत उपन्यास में आत्मसंयमी नारी के चित्रण के रूप में 'देवीना', 'काली', 'भागवंती', 'माधवी' तथा ज्योत्नाबाई आदि नारियों को चित्रित किया है। उनमें से देवीना का अपने आप प्रति संयमी रूप हम तब नजर आता है, जब उसका प्रेमी घने जंगलों के एकांत में सिर्फ दोनो की उपस्थिति में विवाह तथा अभिसार का प्रस्ताव रखता है। तब बड़ी होशियारी से वह अपने आप पर संयम रखती है, और उसके प्रस्ताव को अस्विकार करती है। तथा 'काली' नामक युवती, खुले आम अपने उपर होनेवाले अन्याय अत्याचार का घरती पर गिरकर भी अपने आप पर संयम बनाए रखती है। तथा भागवंती नामक एक युवती भरी जवानी में विधवा होने पर भी अपने चारित्र्य को बनाए रखती है। बल्कि अपने निडर स्वभाव के कारण गाँव का हर आदमी उससे बचके रहता है। अतः एक विधवा का जीवन जीते हुए भी वह अंत तक अपने आत्मसंयम को बनाएँ रखती है। अतः प्रस्तुत उपन्यास में कतिपय नारीयों का चित्रण आत्मसंयमी नारियों के रूप में प्रस्तुत हुआ है।

5.3.2 कर्म श्रेष्ठत्व

मनुष्य का कर्म श्रेष्ठ होता है। भले ही हम मनुष्य की श्रेष्ठता उसके जन्म पर मानते हो लेकिन वास्तविकता तो यह है कि मनुष्य का श्रेष्ठत्व उसके जन्म पर नहीं तो उसके कर्म पर ही निर्भर होता है। प्रस्तुत देवीना उपन्यास की नायिका देवीना एक अनाथ, लावारिस युवती है। उसके पैदा होते ही उसकी माँ ने उसे चुपचाप सड़क के किनारे फेंक दिया था। अतः देवीना को उम्रभर अपनी असली माता-पिता का नाम तथा उसकी असली कुल-जाति का पता नहीं चलता। संयोगवश उसे मंगलबाबा रास्ते से उठाकर अपने घर ले आते है और उसका लालन-पालन अच्छी तरह से करते है। आगे वही अनाथ, लावारिस बच्ची अपने कर्तव्य से अपना तथा अपने माता-पिता का नाम रोशन करती है। तथा देवीना उपन्यास की नायिका बनकर हमारे सामने प्रस्तुत होती

है। अतः वह हमें दिखलाती है कि मनुष्य का श्रेष्ठत्व उसके जन्म से नहीं तो उसके कर्म पर अवलंबित होता है।

मनुष्य का अपने जीवन यापन में अगर कर्म श्रेष्ठ होता है तो उसके कर्म के कर्मफल उसे अवश्य ही अच्छे मिलेंगे। तथा इसके विपरित अगर किसी मनुष्य का कर्म बुरा होता है तो उसका फल उसे अवश्य बुरा ही मिलेगा। अतः हर मनुष्य को अपने जीवन में कोई भी अच्छा या बुरा कर्म करते समय अंत में उस कर्म के बदलें में मिलने वाले फल कि चिंता करनी चाहिए। प्रस्तुत उपन्यास में कर्म श्रेष्ठत्व की होड में नर के अपेक्षा नारियों की संख्या अधिक है। देवीना नामक युवती 'लहरतारा' नामक एक अज्ञात गाँव को अपनी कर्मभूमि बनाती है। वह सभी दृष्टि से अभावग्रस्त इस गाँव में अपने कर्म बल से विकास के नए-नए द्‌वार खोलती है। तथा केवल अपने कर्मश्रेष्ठत्व से उस गाँव का सर्वांगिन विकास करती है। इस काम में उसका साथ देनेवाली 'भागवंती' नामक युवती खुद एक विधवा होते हुए भी हर काम में उसका साथ देती है। तथा एक जवान विधवा होते हुए भी वह हर तरह का काम मेहनत और लगन से करती है। गाँव में घर-घर का बर्तन माँझना, घर-घर के कपडे धोना किसी भी तरह का काम वह साफ दिल से करती है। अतः देवीना की तरह भागवंती भी अपने कर्म श्रेष्ठत्व को महत्व देने वाली एक कर्मप्रिय युवती है। इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में नारी के कर्म श्रेष्ठत्व रूप को अंकीत किया है।

5.3.3 परंपरागत मान्यताओं को चुनौती

परंपरागत मान्यताओं के कारण नारी का शोषण किया जाता है। और इन पुराणी मान्यताओं को धर्म तथा संस्कृति का नाम देकर और भी अनेक मजबूत किया जाता है। लेकिन इसी परंपरागत मान्यताओं के खिलाफ कदम उठाने का काम देवीना उपन्यास की एक दलित नारी 'बनिया' करती है। और परंपरागत मान्यताओं को ठुकरा कर अपना एक अलग मकाम बनाती है। बनिया के पति मंगलबाबा रास्ते पर पड़ी हुई एक अनाथ, लावारिस बच्ची को घर ले आते हैं। अतः पहले एक पुत्र (कलुआ) होते हुए भी बनिया उस लावारिस बच्ची को बड़े दुलार से पालती है, एक दूध बुचिया के मुँह में, तो दूसरा कलुआ के मुँह में देती है। लेकिन यह लहरतारा गाँववालों को अच्छा नहीं लगता। परंपरागत मान्यताओं के नाम पर गाँववाले उस अनाथ बालिका को घर में पनाह देने के कारण बनिया तथा उसके पति मंगलबाबा की निंदा करते हैं। तब गुस्से में आकर बनिया गाँववालों पर बरस पड़ती है, "आवै कौन है बड़ा दूध का धुला। सात पुस्त की पोथी उलटकर रख दूँगी, हाँ। किसकी हांडी में क्या चावल पका मुझे सब मालूम। कोई मेरे मुँह ना लगे, हाँ नहीं तो देवरी नांघ दूँगी एक-एक की अंगनइया में, हां, मैं कहे देती हूँ।"[23] वह आगे कहती है, "ब्राह्मण बने हैं, ठाकुर हैं, बड़ी ऊँची जात

के हैं। सूअर जैसा तो जीवन है। मरें हुए, पिटे हुए, यह भी कोई ब्राह्मण ठाकुर की पहचान है? कोई अपनी ताकत तो है नहीं। जो पिट-पिटकर अपनी नजर में खुद छोटे हैं, वहाँ ताकत तो होती नहीं। दाँव ताकत से बढ़कर होता है। देखना यह कैसे केले के गाछ की नाई धड़ाम से गिरता है। अरे घबराओ नहीं बच्चा, तुम्हें कोई खा थोड़े ही जाएगा। आवो गप्प से खाइ लो मुझे, हाँ मुझे फेंको। सत्यानाशी ससुर के कपूत साले। इस गाँव की श्री खतम। सब अमंगल के लच्छन है। अपनी अक्ल तो देखो, दरपन में अपनी शक्ल तो देखो। तेरे दया धरम, नहीं मन में, मुखड़ा का देखे तु दरपन में।"[24] इस तरह बनियाँ परंपरागत मान्यताओं को चुनौती देती है।

परंपरागत मान्यताएँ अपने आप में मजबुत दिवारों की तरह होती है। यहा मानो हर परंपरागत मान्यता उस मजबुत दिवार की मजबुत ईट हो। अतः भला ऐसी इतनी मजबुत परंपरागत मान्यताओं की दिवार को तोड़ना क्या आसान काम है? नहीं फिर भी प्रस्तुत उपन्यास में अनेक नारीयों ने इस परंपरागत मान्यताओं की दिवार को गिराने का काम किया है। प्रस्तुत उपन्यास में सबसे पहला यह काम 'बनिया' नामक नारी करती है। वह परंपरागत जातिव्यवस्था को अमान्य करते हुए एक लावारिस बच्ची को पालती है। तथा गाँव के हर जाँतिव्यवस्था के ठेकेदार को गाँव के चौराहे पर खडी होकर खूब गालिया देती है। इसके साथ-साथ देवीना नामक युवती अपनी कर्मभूमि बने लहरतारा नामक गाँव में जो परंपरागत मान्यताएँ थी - चोरी, लुटमार, गुंडागर्दी, आदि को समाप्त करती है। इसके साथ-साथ वह जाँतिप्रथा, अंधविश्वासू मानसिकता आदि परंपरागत मान्यताओं को जड से ही उखाड़ फेंकने का प्रयास करती है। इसी तरह प्रस्तुत उपन्यास में नारी पात्रों के द्वारा परंपरागत मान्यताओं को समाप्त करने का प्रयास किया है।

5.3.4 प्रतिकूल परिस्थिति में शिक्षा प्राप्ति

'देवीना' उपन्यास की नायिका प्रतिकूल परिस्थिति में शिक्षा प्राप्त करती है। वह एक अनाथ बच्ची होती है। उसका लालन-पालन मंगलबाबा तथा बनिया करते हैं। लेकिन आगे उसकी माँ बनियाँ की मृत्यु हो जाती है, तब उसके पिता अपना सबकुछ अपने पुत्र कलुआ पर सौंपकर गाँव छोड़कर वन में एकांत में रहते हैं, साथ में बिटिया 'देवीना' भी रहती है। अतः इतने प्रतिकूल परिवेश में भी देवीना अपना अध्ययन जारी रखती है तथा स्कूल जाती है। देवीना आठवी कक्षा में सर्वप्रथम आती है, उसे हर पेपर में अस्सी-नब्बे प्रतिशत अंक प्राप्त होते हैं। आगे वह इंटर में भी सबसे अव्वल आती है। इसी तरह पढ़ाई करते-करते देवीना बी.ए. तक की उच्च शिक्षा प्राप्त करती है। अतः देवीना उपन्यास की नारी प्रतिकूल परिस्थिति में भी उच्च शिक्षा प्राप्त करती है।

शिक्षा प्राप्ति का अधिकार हर एक को होता है। लेकिन शिक्षा प्राप्ति संबंधी यह अधिकार होते हुए भी हर एक को शिक्षा प्राप्ति करना नसिब नहीं होता। क्योंकि हर एक की पारिवारिक हालत अलग-अलग होती है। अतः जिस परिवार में एक वक्त का खाना नसिब न हो, उस परिवार के बच्चे शिक्षा प्राप्ति कैसे करे? फिर ऐसे बच्चों को उचित समय में उचित शिक्षा नहीं मिल पाती। परिणामतः उनका अपना व्यक्तिगत जीवन तो सचनीय बनता है हि साथ-साथ उनके परिवार वालों का भी जीवन सचनीय बनता है।

प्रस्तुत उपन्यास का मुख्य नारी पात्र 'देवीना' भी अपना बचपन सोचनीय अवस्था में बीताती है। वह एक लावारिस बच्ची होते हुए भी अति प्रतिकूल परिस्थिति में बी.ए. तक की उच्च शिक्षा प्राप्त करती है। वह शिक्षा का महत्व भलिभाँति जानती है। वह जानती है जब तक किसी परिवार का युवक या युवती उचित शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता तब तक उस परिवार का विकास नहीं हो सकता। इसलिए देवीना अपनी कर्मभूमि की तलाश में भटकते-भटकते जिस गाँव में रुकती है उस 'लहरतारा' गाँव में बच्चों के लिए एक स्कूल खोलती है। वह गाँव एक अप्रगत गाँव था। जब देवीना उस गाँव में स्कूल खोलना चाहती थी, तब परंपरागत मलिन मानसिकतावाले गाँववाले सब मिलकर देवीना का कड़ा विरोध करते है। फिर भी शिक्षित युवती देवीना सभी गाँववालों को स्कूल का महत्व बताती है। तथा गाँव में स्कूल शुरू करती है। इसितरह प्रस्तुत उपन्यास में नारी का प्रतिकूल परिस्थिति में शिक्षा प्राप्ति का चित्रण प्रस्तुत हुआ है।

5.3.5 आज्ञापालक वृत्ति

नारी के कतिपय श्रेष्ठ गुणों में उसकी आज्ञापालक वृत्ति यह गुण एक श्रेष्ठ गुण माना जाता है। देवीना उपन्यास की नायिका देवीना आज्ञापालक नारी है। वह देवकुमार नामक युवक से प्रेम करती है तथा दोनों विवाह करना चाहते हैं। जब उसका प्रेमी उसे माँ-बाप के आशिर्वाद के सिवाय विवाह करने को मनाता है। तब वह बड़ी विचारपूर्वक उसके प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहती है कि, "नहीं, पहले हमें बाबा के पास जाना होगा।"[25] जब देवकुमार और देवीना उसके बाबा के पास जाते हैं, तब देवीना बाबा को अपने विवाह के तथा प्रेम के बारे में बताती है। लेकिन उसके बाबा उन दोनों के प्रेम की परीक्षा लेना चाहते हैं और उन दोनों के चार साल अलग-अलग दिशा में जाने को कहते हैं। अतः देवीना बिना किसी आपत्ति के अपने पिता की आज्ञा पालने के लिए तैयार होती है। वह कहती है, "यह हमारे प्रेम की परीक्षा है? ... हमें स्वीकार है।"[26] इसी तरह उसकी आज्ञापालक वृत्ति उसे श्रेष्ठ बनाती है।

प्रस्तुत उपन्यास में कतिपय नारीयों का चित्रण आज्ञापालक नारियों के रूप में हुआ है। नारी व्यक्तित्व में होनेवाले कतिपय महान गुणों से उसका आज्ञापालकत्व यह गुण

भी एक महान गुण है। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित मुख पात्र देवीना को आज्ञापालक व्यक्तित्व का एक प्रमुख उदाहरण है। इसके साथ-साथ जान हजारा, गुलमेहंदी, बादररेखवा आदि नारियाँ भी अपने-अपने व्यक्तित्व के अज्ञापालक रूप में अपना अलग महत्व रखती है। क्योंकि लहरतारा गाँव की रहनेवाली यह तीनों नारीयाँ वेश्या व्यवसाय करती है। साल में चार महिने तक वे बंबई, कलकत्ता जैसे बडे-बडे शहरों में जाकर अपने देह-बदन का व्यापार करती है। और इस अनैतिक धंदे से वे खूब पैसा कमाकर फिर अपने गाँव वापस आती है। लेकिन यह बात जब 'देवीना' को मालूम पड़ती है, तब वह उन नारियों को सुधारने का फैसला करती है। इसके लिए वह उनके पीछे-पीछे शहर में जाती है तथा उन्हें वेश्या व्यावसाय करते हुए रंगेहाथ पकडती है। तब वह उन नारीयों को उचित मार्गदर्शन करके उन्हें वेश्या व्यवसाय करने से परावृत्त करती है। अतः वह नारियाँ भी देवीना की अज्ञा अपने सर आँखोपर मानकर वेश्या व्यवसाय करना छोड देती है। इसके साथ-साथ 'काली' नामक युवती जब कई सालों बाद अपना पति उसे अपने साथ लेने आता है तब काली उसके साथ जाने को तैयार नहीं होती। लेकिन जब देवीना उसे अज्ञा करती है तब वह अपने पति के साथ जाने के लिए तैयार होती है। इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास में कतिपय नारीयों को आज्ञापालक व्यक्तित्व के साथ चित्रित किया है।

5.3.6 पुरुषी अत्याचार का विरोध

सदीयों से पुरुष द्‌वारा नारी पर तरह-तरह के अत्याचार हुए है। और नारी इन अत्याचारों को चूपचाप सहती आई है। लेकिन अब दिन-ब-दिन नारी उन अत्याचारों के खिलाफ लड़ना सिखी है। अब वह जागृत हुई है तथा उन अत्याचारों का कड़ा मुकाबला करने में तत्पर है। प्रस्तुत उपन्यास में लहरतारा गाँव के लोग 'काली' नामक युवति को दिन दहाड़े लाठी से पीटते है। इस मारपीट में काली के माथे से खून टपकता है तथा वह सड़क पर गिरकर जोर-जोर से चिल्ला रही है। लेकिन उन तमाम गाँववालों में से एक भी आदमी काली को उस पुरुषी अत्याचार से मुक्त कराने के लिए आगे नहीं आता। सब वहाँ खड़े-खड़े एक नारी अत्याचार का तमाशा देख रहे थे। उस समय एक नारी ही नारी के काम आ जाती है। देवीना नामक युवति उस भीड़ को चिरते हुए आगे आती है और अपनी बाँहे फैलाकर उस स्त्री को अपने अंग से लगा लेती है और जोर से चिल्लाती है, "खबरदार किसीने हाथ उठाया तो।" अतः वह काली को सहारा देकर उसके घर ले चलती है तब वे लोग फिर उसका रास्ता रोकते हैं, तब देवीना डाँटकर कहती है, "सीधे यहाँ से चले जाओ, इस गाँव को छोड़कर। वरना एक-एक को हथकड़ी पहनाऊँगी।"[27] अतः नारी अब पुरुषी अत्याचार का कड़ा मुकाबला कर रही है।

प्रस्तुत उपन्यास में परंपरागत पुरूष प्रधान व्यवस्था के समर्थक इन पुरूषों से नारी के प्रति अत्याचार के बहुत से प्रसंग चित्रित हुए है। पुरुष नारी पर तब आत्याचार करता है जब नारी उसके पुरुषी अहंकार को चुनौती देती है। अतः इसलिए वह पुरुष नारी पर तरह तरह के अत्याचार करके अपने पुरुषी अहंकार को बनाए रखता है। आज भी पुरुष को यह भय है कि कही नारी जागृत होकर उनके परंपरागत पुरुषी अहंकार को समाप्त न कर दे।

इस उपन्यास में भी कतिपय नारीयों को पुरुषी अत्याचार का शिकार होना पड़ा है। 'काली' के साथ-साथ 'माधवी' नामक युवती को भी पुरुषी अत्याचार का शिकार होना पड़ा है। वह जब तक जवान थी तब तक उसका रखवाला राजकुमार उसका लैंगिक शोषण करता है। और जब उसका उससे जी भर जाता है तब उसके साथ अन्याय, अत्याचार शुरू करता है। उसे जब चाहे तब अपने अंगूली के ईशारे पर नचाता है। कभी रात में तो कभी दिन में उसे हररोज पीटता है। इतना सबकुछ करने पर भी उसके अत्याचार की आँधी थमती नहीं है। और एक दिन रात के ढाई बजे शराब पीकर वह उसे बहुत पीटता है, तथा जमिन पर से घसीट कर एक तहखाने में बंद करता है। और बोचारी 'माधवी' की उसी में घुट-घुट कर मौत हो जाती है। लेकिन अंत तक उसके उपर होनेवाले पुरुषी अत्याचार को कोई रोक नहीं सकता। इसितरह इस उपन्यास में और भी ऐसी अनेक नारीयाँ है जिन्हे परंपरागत पुरुषी अत्याचार का शिकार होना पड़ा है।

5.3.7 परिवर्तनकारी नारी

अब नारी पुरुष से भी श्रेष्ठ बनती जा रही है। इस संबंध में डॉ. लाल कहते हैं कि, "देना स्त्री का सहज स्वभाव है, देना पुरुष का अहंकार है और इस अहंकार को पिघलाने वाली केवल स्त्री है। जिसे ऐसी स्त्री नहीं मिली वह पुरुष 'पुरुष' नहीं हुआ।"[28] प्रस्तुत उपन्यास की नायिका देवीना एक परिवर्तनकारी नारी है। वह लहरतारा नामक गाँव को अपनी कर्मभूमि बनाती है। उस गाँव में तरह-तरह के सुधार कराती है। उसी गाँव का एक नौजवान रामदीन जो बी.ए. तक पढ़ा है, पर अपने गाँव तथा गाँववालों के चाल-चलन से तंग आकर वह अपना गाँव, घर छोड़कर दूर शहर के लिए पलायन करना चाहता है। लेकिन देवीना उसका रास्ता रोककर उसे इसी तरह गाँव छोड़कर चले जाने से मना करती है। तब वह युवक उसे कहता है इस गाँव में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसमें सुधार किया जा सकता है, यह गाँव तो पूरी दूनियाँ में बदनाम गाँव है। तब देवीना उसे समझाते हुए कहती है, "तुम इस गाँव को बुरा अप्रिय पाकर छोड़ रहे हो और किसी प्रिय की तलाश में जा रहे हो परदेस। पर विश्वास करो जो

प्रिय-अप्रिय, अच्छा-बुरा में बाँटकर देखता है, वह स्वीकार नहीं करता, पाता नहीं।"[29] अतः देवीना रामदीन का मतपरिवर्तन करके वापस अपने लहरतारा गाँव में लेकर आती है।

उपन्यास का मुख्य नारी पात्र देवीना 'लहरतारा' नामक गाँव में विभिन्न सुधार करता है। वह गाँव परंपरागत पुरानी मानसिकताओं में जी रहा था। उस गाँव में अनेक कुरीतीयाँ प्रचलित थी। लेकिन देवीना नामक नारी अपने परम आत्मविश्वास के साथ उस गाँव में तरह-तरह के सुधार लाकर उस गाँव का सर्वांगिण विकास करती है। देवीना उस गाँव में यह चाहती है कि कोई भी आदमी या परिवार भूका न मरे। इसलिए देवीना उस 'लहरतारा' गाँव के प्रत्येक घर-घरमें जाकर उनकी रसोई देखती है। तथा जबा जी चाहे किसी के भी घर में घूसकर खाना खाने को बैठती है। इसी बहाने वह घर घर में जाकर यह देखती है कि कही किसी को भूखा न सोना पडे। वह यह चाहती है कि देवीना के होते हुए उस गाँव का कोई छोटा बालक भी भूखा न रहे।

परिवर्तनकारी भावना से प्रेरित देवीना भौतिक विकास के साथ-साथ मनुष्य के अंतरिक भावना का भी विकास करना चाहती है। वह लहरतारा गाँव के निवासी नर तथा नारीयों की अंतरिक भावना को उदात्त बनाने का प्रयास करती है। उस गाँव में देवीना के आने के पूर्व वह गाँव आपस में जानवरों जैसा बर्ताव करता था। किसी को भी अपने पड़ोसी, तथा साथी के सुख तथा दुःख से कोई लेना देना नहीं था। हर कोई अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए ही जी रहा था। यहाँ तक की माँ-बाप, पिता-पुत्र, भाई-बहन जैसे खुन के रिश्ते भी समाप्त हो चुके थे। लेकिन देवीना उन आदमीयों को इन्सानीयत का पाठ पढ़ाती है, तथा उनमें परिवर्तनकारीता की भावना लाती है।

5.3.8 मातृत्व कर्तव्य का पालन

परिस्थिति कितनी भी भयानक क्यों न हो, नारी अपने मातृत्व कर्तव्य पालन से कभी पीछे नहीं हटती। वह हर हाल में, हर आपत्ति का सामना करती है लेकिन अपने कलेजे के टुकड़े को सही-सलामत रखती है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका देवीना एक मातृवत्सल ह्रदय है। अपने प्रेम की अग्निपरीक्षा देते हुए वह चार साल अपने घर-द्वार से तथा प्रेमी से बिछड़कर एक अज्ञात गाँव में रहती है। वहाँ उसे 'अनुराग' नामक पुत्र की प्राप्ति होती है। लेकिन ऐसी हालत में भी वह अपने पुत्र का लालन-पालन अच्छी तरह से करती है। वक्त आने पर वह एक विधवा धोबिन 'भागवंती' के घर में रहती है। अतः दर-दर की ठोकरें खाकर भी वह अपने बच्चे का ठीक तरह से खयाल रखती है, उसे किसी तरह की कमी महसूस नहीं होने देती। हर हाल में वह अपने मातृत्व कर्तव्य का पालन करती रहती है। और इतना ही नहीं तो उसके जीवन में एक वक्त ऐसा आता है, वह अपने पुत्र अनुराग के लिए अपने पति, प्रेमी देवकुमार को तक

छोड़ने को तैयार हो जाती है। देवीना अपने पति को कहती है, "मेरे पास हमारा बच्चा है, अनुराग। मैं किसी बच्चे के साथ नहीं जा सकती यहाँ से।"[30] अतः इस तरह देवीना उपन्यास में मातृत्व कर्तव्य का पालन सफलता के साथ हुआ है।

मातृत्व कर्तव्य का पालन हर नारी अच्छी तरह से करती है। मातृत्व यह नारी जाँति को मिला भगवान का सबसे खूबसूरत वरदान है। अपने इसी मातृत्व के वरदान के लिए नारी को सबसे पूज्य माना जाता है। आज तक संसार में जितने सारे नर तथा नारियाँ उपजी तथा भविष्य में अपजी वह सब इसी मातृवात्सल नारी के कारण ही। इस पुरुष प्रधान व्यवस्था के ठेकेदार पुरुष भले कितना ही अपने बड़पन का ढिंढोरा पीटे लेकिन यह बात उन्हें सदैव याद रखनी चाहिए की उनकी निर्मिती इसी मातृवत्सल नारी के कोख से हुई है। अगर नारी न होती तो पुरुष भी नहीं होता। अतः इस मातृवत्सल की बात को नारी ही अच्छी तरह से जान सकती है।

प्रस्तुत उपन्यास में मातृवत्सल नारी के रूप में 'बनिया' नामक प्रौढा युवती का चित्रण भी सफलता के साथ हुआ है। 'बनिया' एक शादीशुदा युवती है और उसे 'कलुआ' नामक एक पुत्र भी है। फिर भी एक दिन उसके पति 'मँगलबाबा' रास्ते पर पड़ी मिली एक लावारिस बच्ची को अपने साथ लेकर आते है। अतः पहले मंगलबाबा को यह भय था कि कही उनकी पत्नी 'बनिया' इस बच्ची को देखकर कोई तमाशा न करे। लेकिन उस लावारिस बच्ची को देखकर 'बनिया' का दिल पिघल जाता है और उस लावारिस बच्ची को अपने पुत्र 'कलुआ' समेत अच्छी तरह से पालती है। एक दूध उस बच्ची के मुख में तथा एक दूध 'कलुआ' के मुख में दकर वह अपने मातृवत्सल ह्रदय का परिचय देती है। तथा अंत तक अपने मातृत्व धर्म का पालन करती है। इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में नारी के मातृत्वधर्म का चित्रण हुआ है।

5.3.9 सामाजिक परिवर्तनकारी नारी

प्रस्तुत देवीना उपन्यास में नारी का सामाजिक परिवर्तनकारी पक्ष प्रबल रहा है। देवीना लहरतारा नामक गाँव को अपनी कर्मभूमि बनाती है। पर वह गाँव सामाजिकता की दृष्टि से काफी हिन-दीन है। गाँव में कोई आदमी खेती में काम करना नहीं चाहता। बस उन्हें सिर्फ चोरी-लुटमार करने की आदत है। पर देवीना उन सभी गाँववालों में उचित मनपरिवर्तन कराके खेती में काम कराने के लिए प्रवृत्त करती है। गाँव में जो जवान औरतें युवतियाँ थी वह शहरों में जाकर वैश्या व्यवसाय करती थी, उनके इस देह व्यापार के काम में उनके घरवाले लोग भी सहायता करते थे। मानो उस गाँव में नैतिकता जीवित ही नहीं थी। लेकिन उन सभी नारीयों को देवीना कहती है, "अगर तुम सब यह धंदा करोगी तो मैं भी यहाँ यहीं करूँगी।"[31] अतः देवीना उनका भी मनपरिवर्तन कराने में सफलता प्राप्त करती है। उसी गाँव में एक 'भँवरा' नामक

पेशावर चोर है। उसको भी देवीना उचित सलाह देकर उसका मनपरिवर्तन करती है। इस तरह देवीना उपन्यास में चित्रित नारी पात्र सामाजिक परिवर्तनकारी भावना के प्रति सजग है।

सामाजिक परिवर्तन कराने के उद्देश्य से ही देवीना 'लहरतारा' नामक गाँव में बच्चों के लिए नया स्कूल खोलती है। अतः स्कूल खोलने से पूर्व वह उस गाँव के सभी प्रौढ नर-नारियों को तथा युवक-युवतियों को एक जगह इकट्ठा करती है। तथा सभी को पढ़ाई लिखाई का महत्व समझाती है। तथा अपने गाँव में स्कूल का होना यह कितना महत्त्वपूर्ण है इस बात का सबको यकीन दिलाती है। अतः देवीना की यह समाजसुधारवादी बातें सुनकर गाँव वालों में परिवर्तन होता है। तथा वे सब मिलकर देवीना के इस नेक काम में सहायता करने की ठानते हैं। अतः देवीना गाँव के युवकों की सहायता से गाँव के लिए स्कूल बनाती है। लेकिन फिर सवाल यह पैदा होता है कि उस स्कूल में टीचर कहाँ से मिलेगा। तब देवीना खूद उस स्कूल में टीचर बन जाती है। क्योंकि वह बी.ए. तक पढ़ी लिखि होती है। अतः देवीना पूरी मेहनत और लगन से स्कूल के बच्चों को पढ़ाती है। तथा गाँव में भी लोगों को अच्छी, बुरी बाते हमेशा बतलाती है। अतः वह 'लहरतारा' नामक अविकसीत गाँव में दिनरात प्रयास करके सामाजिक परिवर्तन लाती है।

'बनिया' नामक नारी भी अपने गाँव में फैले विभिन्न सामाजिक अंधविश्वासों को मिटाने का प्रयास करती है। तथा समाज में फैले जाँति-पाँति की व्यवस्था का कडा विरोध करती है। तथा गाँव में जाँति-पाँति व्यवस्था के समर्थकों को गाँव के चौराहे पर घडी होकर बड़ी-बड़ी आवाज में गालिया देती है। अतः वह अपने यहाँ एक अनाथ बच्ची को पालती है। इसी तरह प्रस्तुत उपन्यास में नारी का समाज परिवर्तनकारी रूप चित्रित हुआ है।

5.3.10 त्यागी वृत्ति

त्याग मनुष्य के मनुष्यत्व का एक श्रेष्ठ गुण है। देवीना उपन्यास की नायिका देवीना तो त्याग की मूर्ति ही बन जाती है। त्याग, अहंकार संबंधी डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल कहते हैं, "अहंकार बहुत बड़ी चीज है। जिसमें अहंकार नहीं, वह भी कोई प्राणी है? बस सिर्फ शर्त यह है कि अहंकार के लिए उसके अनुरूप ही पात्र होना चाहिए।"[32] देवीना पहले त्याग करती है अपने स्वार्थ का, वह बी.ए. तक पढ़ी लिखी युवती है, उसके पिता उसे आगे पढ़ाना चाहते हैं तथा अपना भविष्य उज्वल बनाने को कहते हैं। पर देवीना अपने ऊपर किए गए पिता के उपकार के खातिर अपनी आगे की पढ़ाई रोकती है तथा अपने पिता के ही साथ रहती है। वह अपने पिता को कहती है, "ना-बाबा, कुछ भी नहीं है इस पढ़ाई में।"[33] यह उसका पहला त्याग था। उपन्यास के अंत

में जब देवीना तथा उसके पुत्र अनुराग को लेने के लिए उसका प्रेमी-पति देवकुमार आता है और उससे क्षमा याचना करता है तथा अपने साथ चलने को कहता है फिर भी देवीना उसके साथ जाने को तैयार नहीं होती। अतः वह अपने पारिवारिक जीवन का त्याग कर देती है। यह देवीना का अंतिम और सर्वश्रेष्ठ त्याग बन जाता है। देवीना के साथ-साथ उपन्यास की अन्य नारीयाँ – काली, भागवंती, जोत्स्नाबाई, माधवी आदि अपने जीवन में अलग-अलग तरह से त्याग करती है। और त्याग से ही अपना विरान जीवन हराभरा कराती है। इस तरह देवीना उपन्यास की नारीयों में त्यागी वृत्ति का श्रेष्ठ गुण सफलता से चित्रित हुआ है।

'काली' नामक युवती भी अपने जीवन में बड़ा त्याग करती है। वह एक गरीब परिवार की युवती है। उसके परिवार में उसके सिवाय बिमार पिताजी, तथा हमेशा हाल-बेहाल रहनेवाली अपनी करूण माँ तथा एक उससे छोटा भाई है। कुलमिलाकर उसके परिवार के हालात काफी खराब थे। इसी अवस्था में उसकी शादी होती है लेकिन उसका पति उसकी यह गरीबी की हालत देखकर उसे प्रताडीत करता है। तथा घर से बाहर निकालना चाहता है। फिर भी वह अपने मात-पिता की इज्जत की खातिर अपने नारीस्वाभिमान का त्याग करती है। तथा चूपचाप अपनी पति की मार-पीट सहती है। इसके साथ-साथ भागवंती नामक युवती भरी जवानी में विधवा होती है। अतः उसके तरफ न जाने कितने युवक पत्नी की दृष्टि से देखते थे। तथा उसके साथ विवाह करना चाहते हैं। लेकिन वह अपने पति के प्रेम के खातिर, अपने प्रेमी पति की याद को कायम रखने के लिए उम्र भर वैसी ही विधवा बनकर अपना जीवन व्यतीत करती है। अतः अपने पति के लिए वह अपने समस्त यौवन का त्याग करती है। और दूसरों के घरों में बर्तन धोकर तथा कपडे धोकर अपना जीवन चलाती है। तथा ज्योत्सनाबाई नामक नर्तकी 'माधवी' नामक दूसरी नर्तकी को अपनी बहन मानती है तथा उसपर होनेवाले हर अन्याय को कम करने के लिए हर बार अपने मान सम्मान का त्याग करती है और अंत तक एक शापित जीवन जीती है। इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में देवीना, काली, भागवंती, ज्योत्स्नाबाई आदि कई नारिया अपने जीवन में अंत तक त्याग करती है।

5.4 नारी का परिवर्तित रूप

काल के अबाध प्रवाह में बहते-बहते वर्तमान समय तक आते-आते अतीत की तुलना में नारी के वर्तमान जीवन में काफी परिवर्तन दिखाई देता है, और वर्तमान की तुलना में भविष्य में यह परिवर्तन और अलगता से दिखाई देगा। "सृष्टि के प्रारंभ में जब हमारा समाज आदिम युग के दौर में था तब तो नारी और पुरुष समान थे। यदि आज आदि मानव और आदि मानवी मौजुद होते तो वे यहीं कहते कि हम तो साथ-साथ जनमे थे

तथा धूप और चांदनी में वर्षा और आपत में साथ ही साथ घूमते भी थे, बल्कि आहार-संचय भी साथ ही करते थें और अगर कोई जानवर हमपर टूट पड़ता तो हम एक साथ उसका सामना करते थे। ... जब से नारी और पुरुष ने अपने गुणों का विभाजन कर लिया, नारी का क्षेत्र घर और पुरुष का क्षेत्र बाहर बना दिया गया। तभी से जिंदगी दो टुकड़ों में विभाजित हो गई। घर का जीवन सीमित और बाहर का जीवन निस्सीम होता गया। एक छोटी जिंदगी बड़ी जिंदगी के आधिकाधिक अधीन होती गई।"[34]

नारी के इस परिवर्तित रूप के साथ साहित्य की अभिव्यक्ति शैली में भी मूलभूत परिवर्तन आए है लेकिन नारी के इस परिवर्तन को वास्तविकता के साथ अभिव्यक्त करने का साहस दिखाई नहीं देता। इस संबंध में डॉ. अर्जुन चव्हाण कहते हैं कि अब कल्पना से भी कटु है यथार्थ। उससे भी कटु है उसको पहचानना, पचाना और ईमानदारी से वाणी देना।"[35] अतः देवीना उपन्यास में चित्रित नारी के परिवर्तन को हम निम्न रूप से देखेंगे।

5.4.1 विद्रोही नारी

आज के वर्तमान युग की नारी अत्याचार को सहनेवाली नहीं, तो उन अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह करनेवाली नारी है। इस संबंध में दशरथ ओझा जी बतलाते हैं, "आज की कजरी विषम परिस्थितियों पर विजय पाती है और शंकालु पति को भी अपने शौर्यमय सौंदर्य से वशीभूत कर लेती है। कारण यह है कि उसके कोमल हाथों में हस्तकौशल्य के साथ खड्गा धारण करने की भी क्षमता है। आदर्श ग्रामीण नारी ऐसी ही महिला हो सकती है।"[36] प्रस्तुत देवीना उपन्यास में कतिपय नारीयों के विद्रोही रूप में दर्शन होते है। देवीना की माँ बनिया एक विद्रोही नारी है। वह अपनी बेटी के लिए पूरे गाँववालों के साथ झगड़ा करती है तथा अपने पति मंगलबाबा को कहती है, "ये मूरख गाँववाले जो कहेंगे, वही हो जाओगे तुम?"[37] इस तरह वह बड़ी निड़रता के साथ गाँववालों के आरोपों का विरोध करती है। तथा उपन्यास की नायिका देवीना भी काली नामक युवती को गाँववालों के अत्याचारों से मुक्त कराती है। जब वह पहली बार लहरतारा नामक गाँव में दाखिल होती है तो वह देखती है कि काली नामक युवतीपर दिन-दहाड़े गाँव के कुछ लोग अत्याचार कर रहे है। अतः उसके अंदर विद्रोह की आग भड़कती है और वह भीड़ को चिरते हुए आगे आती है और शोषित अत्याचारित काली को अपने बाहों में भरकर उन अत्याचारितों पर चिल्लाती है, "खबरदार किसीने हाथ उठाया तो।" अतः इस तरह देवीना उपन्यास में नारी का विद्रोही रूप में चित्रण काफी सफलता के साथ हुआ है।

5.4.2 'स्व' कर्तृत्व पर विश्वास

अब नारी स्वतंत्र है। उसे अपने कर्तव्य पर अगाध विश्वास है। मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ रोटी, कपड़ा और मकान इन तीनों का अब नारी स्वयं प्रबंध कर सकती

है। इन सब के लिए अब उसे पुरुष की सहायता तथा हमदर्दी की कोई जरूरत नहीं है। इस संबंध में लाल के शृंगार उपन्यास की नायिका कहती है, "एक दिन मुझे अपनी बिमारी के रहस्य का पता लग गया। स्त्री अपने आपको पुरुष से कमजोर क्यों समझती है? क्या वह पुरुष बिना अकेली नहीं रह सकती? और मैं बिल्कुक अकेली हो गई। यहाँ तक कि अपने पापा से भी पृथक। अपने सारे गहने बेचकर तलाक के लिए पति से मुकदमा लड़ी और मैं जीत गई। अकेली रहने लगी। स्कूल के दिनों का छोड़ा हुआ संगीत फिर से सीखने लगी।"[38]

प्रस्तुत देवीना उपन्यास की नायिका भी अपने पति देवकुमार से त्यागने पर उसके चरणों में गिड़गिड़ाने के बजाय अपनी खुद की कर्मभूमि बनाती है। अपने पति के त्यागने पर वह अपने पिताजी के घर पर भी नहीं जाती तो सीधा लहरतारा नामक अज्ञात गाँव में जाती है और वहाँ अपनी खुद की कर्मभूमि बनाती है। उस अज्ञात गाँव को वह सुधारने के लिए वह तरह-तरह के प्रयास करती है तथा उसमें वह सफल बन जाती है। उस गाँव में बच्चों के लिए एक स्कूल शुरु करती है तथा स्कूल में खुद अध्यापिका बन जाती है। अतः अपने कर्तव्य के बल पर वह लहरतारा गाँव की 'स्वामिनी' बन जाती है। तथा अन्य को अपने कर्तृत्व का परिचय कराती है।

5.4.3 आधुनिक विचारक नारी

अब नारी आधुनिक विचारक बन गई है। परंपरा से चली आई पुरानी मान्यताओं को अब आज की आधुनिक नारी बदल रही है। नारी के आधुनिकता को वाणी देते हुए ओझा जी कहते हैं कि, "ग्रामीण नारी के आमूल परिवर्तित शौर्य रूप को रंगमंच पर प्रदर्शित करने के पीछे एक कारण यह भी हो सकता है कि नारी स्वतः संकोचशील होने से स्टेज पर इस प्रकार प्रदर्शन नहीं कर सकती थी, किंतु सांस्कृतिक नवोन्मेष के प्रभाव से जब वह स्टेज पर आई तो उसमें ही नहीं, दर्शकों तक के दृष्टिकोन में भी परिवर्तन आया।"[39] इस तरह साहित्य की लगभग सभी विधाओं में नारी के प्रति आधुनिक विचारों का निर्वाह होने लगा। प्रस्तुत देवीना उपन्यास की नायिका देवीना एक आधुनिक विचारक नारी है। वह अपने आधुनिक विचारों का वहन करके लहरतारा गाँव का सर्वांगिण विकास करती है। गाँव के मर्दों को चोरी-लुटमार छोड़के मेहनती कमाई खाने की सलाह देती है। तथा गाँव की औरतों को अपने नारी स्वाभिमान के प्रति सदैव जागरूक रहने को कहती है। काली को देवीना सिखाती है कि अगर तेरा पति तुझे मारेगा तो तू भी उसे मारना। और कहती है कि, "तुम्हारा आत्मसन्मान ही तुम्हारा साथ देगा।"[40] इस तरह देवीना उपन्यास की नारीयाँ आधुनिक विचारक है।

5.4.4 सत्य को परखनेवाली नारी

आज की नारी सत्य को परखनेवाली नारी है। वह सिर्फ कही-सनी बातों पर ऐतबार नहीं करती तो सत्य की तह तक जाकर जो मूल वास्तविकता है उसे प्राप्त करती है। प्रस्तुत 'देवीना' उपन्यास की नायिका एक सत्यवादी नारी है। वह अपने प्रेमी देवकुमार से सच्चा प्रेम करती है तथा उसके लिए पूरे चार साल का विरह सहन करती है। फिर चार साल बाद जब वह अपने बाबा के पास आती है तब उसे वहाँ जैसा की पहले तय हुआ था उसी तरह अपना प्रेमी मिलने नहीं आता। इस संबंध में वह अपने पिताजी से पुछती है तो वे बताते हैं कि, "वह यहाँ आए यह तुम्हारी इच्छा है, पर उसकी इच्छा उसीकी है।" लेकिन देवीना किसी पर विश्वास नहीं करती तो देवकुमार क्यों नहीं आया यह देखने के लिए खुद जाती है। तब उसे अपने प्रेमी की बेवफाई का पता चलता है और वह कहती है, "मेरा अब तक का सब जानना-देखना जैसे निस्सार हो गया है।"[41]

5.4.5 पुरुषी अहंकार पर विजयी

आज की आधुनिक नारी ने परंपरागत पुरुषी अहंकार को समाप्त कर दिया है तथा खुद के नारी स्वाभिमान के आगे पुरुष के अहंकार को झुकाया है। लाल के काले फूल का पौधी उपन्यास की नायिका, नायक से कहती है, "मैं जुड़ना नहीं चाहती। ऐसे जुड़े रहने से सदा के लिए टूट कर अलग हो जाना अच्छा समझती हूँ, क्योंकि टूटने से एक ऐसी पैनी-तीखी धार बनती है जिससे की टूटने वाला सदा अपने को सचेत, जागरूक रखता है।"[42] प्रस्तुत देवीना उपन्यास की नायिका अपने प्रेमी, पति के त्यागने पर उसके चरणों में गिड़गिड़ाने के बजाय अपना खुद का अलग अस्तित्व, अलग पहचान बनाती है। तथा अंत में उसका पति उसे लेने आता है, मगर वह उसके साथ जाती नहीं, बल्कि अंत में परास्त होकर उसका पति ही उसकी शरण में आ जाता है।

निष्कर्ष

डॉ. लाल के 'देवीना' उपन्यास में नारी जीवन का चित्रण सफलता के साथ हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास की नारी अपने 'स्व' की रक्षा के लिए सतर्क है तथा वह परम स्वाभिमानी है। उनके उपन्यास की नारी जानती है कि दुख के सिवा और किसी भी तरिके से हम अपनी ताकत को नहीं पहचान सकते और अपनी ताकत को जितना ही कम करके हम जानेंगे, हम अपनी इज्जत भी उतनी ही कम करेंगे। इसलिए उनके उपन्यास की नारी अपने पुरुष प्रधान संस्कृति के बनाए मार्ग पर चलने के बजाए, अपना खुद का रास्ता निर्माण करती है। लाल के देवीना उपन्यास की नारी अपने बलबुते पर खुद की एक अलग कर्मभूमि बनाती है और अंत नायक (पुरुष) अपने अहंकार को भूलकर नारी की बनी-बनाई कर्मभूमि में पनाह लेता है तथा नारी का ही स्वामित्व स्वीकार करता है।

* * *

संदर्भ सूची

अ. क्र		पृ.
1.	गुप्त मैथिलीशरण - यशोधरा	57
2.	डॉ. लक्ष्मीराय - आधुनिक हिंदी नाटक चरित्र सृष्टि के आयाम	450
3.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - देवीना	78
4.	वही	63
5.	डॉ. सरतू प्रसाद मिश्र - नाटककार लक्ष्मीनारायण लाल	205
6.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - आधुनिक हिंदी नाटक चरित्र सृष्टि के आयाम	409
7.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - देवीना	85
8.	संपा. सुशीला गुप्ता - हिंदुस्तानी जवान	8
9.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - काले फूल का पौधा	11
10.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - देवीना	39
11.	राज किशोर - मानव अधिकारों का संघर्ष	70
12.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - देवीना	32
13.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - शृंगार	56
14.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - देवीना	87
15.	वही	65
16.	संपा. सुशीला गुप्ता - हिंदूस्तानी जवान	(संपादकीय)
17.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - देवीना	22
18.	वही	23
19.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - काले फूल का पौधा	53
20.	दिनेशचंद्र वर्मा - समकालीन हिंदी नाटक एवं नाटककार	232
21.	डॉ. विष्णुदत्त राकेश - नभग	62
22.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - देवीना	26
23.	वही	31
24.	वही	33
25.	वही	26
26.	वही	47
27.	वही	57
28.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - शृंगार	27
29.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - देवीना	61
30.	वही	108
31.	वही	70
32.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - वसंत की प्रतीक्षा	30

33.	वही	34
34.	संपा. सुशाली गुप्ता - हिंदूस्तानी जबान	(संपादकीय)
35.	डॉ. अर्जुन चव्हाण - जरा याद करो कुर्वानी	7
36.	डॉ. दशरथ ओझा - आज का हिंदी नाटक - प्रगति और प्रभाव	82
37.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	33
38.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - शृंगार	94
39.	डॉ. दशरथ ओझा - आज का हिंदी नाटक - प्रगति और प्रभाव	83
40.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल - देवीना	76
41.	वही	78
42.	डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला - काले फूल का पौधा	12

* * *